



कृषि एवं किसान
कल्याण मंत्रालय
MINISTRY OF
AGRICULTURE AND
FARMERS WELFARE

सत्यमेव जयते



ग्रामीण विकास मंत्रालय
भारत सरकार
MINISTRY OF RURAL
DEVELOPMENT
GOVERNMENT OF INDIA

सत्यमेव जयते

"प्राकृतिक खेती" पर अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न



1) प्राकृतिक खेती क्या है और यह भारतीय किसानों के बीच लोकप्रियता क्यों हासिल कर रही है?

प्राकृतिक खेती एक कृषि दृष्टिकोण है जो न्यूनतम बाहरी इनपुट पर निर्भर करती है और स्थिरता पर जोर देती है। इसकी कम लागत, बेहतर मृदा स्वास्थ्य और पर्यावरण-अनुकूल प्रथाओं के कारण यह भारत में लोकप्रियता हासिल कर रहा है।

2) प्राकृतिक खेती भारत में टिकाऊ कृषि में कैसे योगदान देती है?

प्राकृतिक खेती रासायनिक आदानों को कम करके, पानी का संरक्षण करके और मिट्टी की उर्वरता को बढ़ाकर टिकाऊ प्रथाओं को बढ़ावा देती है, जिससे दीर्घकालिक कृषि व्यवहार्यता प्राप्त होती है।

3) क्या प्राकृतिक खेती जैविक खेती के समान है?

प्राकृतिक खेती जैविक खेती के साथ समानताएं साझा करती है लेकिन स्वदेशी प्रथाओं और माइक्रोबियल इनपुट पर अधिक ध्यान केंद्रित कर सकती है, जबकि जैविक खेती विशिष्ट प्रमाणीकरण मानकों का पालन करती है।

4) प्राकृतिक खेती के मूल सिद्धांत क्या हैं?

मुख्य सिद्धांतों में न्यूनतम बाहरी इनपुट, स्वदेशी सूक्ष्मजीवों पर निर्भरता, मिट्टी के स्वास्थ्य को बनाए रखना और जैव विविधता को बढ़ावा देना शामिल है।

5) क्या आप "शून्य बजट प्राकृतिक खेती" (ZBNF) की अवधारणा को समझा सकते हैं?

ZBNF न्यूनतम बाहरी इनपुट पर जोर देता है और किसानों को बाहरी बजट पर उनकी निर्भरता को कम करते हुए उपलब्ध संसाधनों पर भरोसा करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

6) प्राकृतिक खेती में स्वदेशी सूक्ष्मजीवों की क्या भूमिका है?

स्वदेशी सूक्ष्मजीव कार्बनिक पदार्थों को विघटित करने, मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने और हानिकारक रोगजनकों को दबाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

7) प्राकृतिक खेती कृषि पारिस्थितिकी तंत्र में जैव विविधता को कैसे बढ़ावा देती है?

प्राकृतिक खेती फसल विविधता, अंतरफसल और देशी वनस्पतियों और जीवों के संरक्षण को प्रोत्साहित करती है, जिससे एक स्वस्थ पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा मिलता है।

8) क्या भारत में प्राकृतिक कृषि पद्धतियों की विभिन्न क्षेत्रीय विविधताएँ हैं?

हाँ, प्राकृतिक कृषि पद्धतियाँ स्थानीय जलवायु, मिट्टी की स्थिति और फसल प्राथमिकताओं के आधार पर भिन्न हो सकती हैं।

9) भारत में प्राकृतिक कृषि तकनीकों का उपयोग करके आमतौर पर कौन सी फसलें उगाई जाती हैं?

आम फसलों में चावल, गेहूँ, बाजरा, दालें और विभिन्न फल और सब्जियाँ शामिल हैं।

10) प्राकृतिक खेती भारत में जल संसाधनों के संरक्षण में कैसे मदद करती है?

प्राकृतिक खेती आच्छादन जैसी प्रथाओं के माध्यम से कुशल जल उपयोग को बढ़ावा देती है, जो वाष्पीकरण को कम करती है, और मिट्टी की जल-धारण क्षमता को बढ़ाती है। प्राकृतिक खेती की ओर संक्रमण

11) मैं पारंपरिक खेती से प्राकृतिक कृषि पद्धतियों की ओर कैसे परिवर्तन कर सकता हूँ?

रासायनिक आदानों को धीरे-धीरे कम करके, प्राकृतिक खेती तकनीकों के बारे में सीखकर और स्थानीय विशेषज्ञों या कृषि विस्तार सेवाओं से मार्गदर्शन प्राप्त करके शुरुआत करें।

12) अपने खेत को प्राकृतिक खेती में परिवर्तित करते समय मुझे सबसे पहले क्या कदम उठाने होंगे?

अपनी मिट्टी के स्वास्थ्य का आकलन करने, स्थानीय प्रथाओं को समझने और एक संक्रमण योजना बनाने से शुरुआत करें जो धीरे-धीरे रासायनिक इनपुट को कम कर दे।

13) क्या प्राकृतिक खेती में परिवर्तन के लिए कोई वित्तीय प्रोत्साहन या सब्सिडी उपलब्ध है?

कुछ भारतीय राज्य प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए वित्तीय प्रोत्साहन और सब्सिडी प्रदान करते हैं; विशिष्ट कार्यक्रमों के लिए अपने स्थानीय कृषि विभाग से संपर्क करें।

14) क्या मैं भूमि के एक छोटे से टुकड़े पर प्राकृतिक खेती कर सकता हूँ, या क्या यह बड़े खेतों के लिए अधिक उपयुक्त है?

प्राकृतिक खेती किसी भी पैमाने पर की जा सकती है, जिससे यह छोटे और बड़े भूमिधारकों के लिए समान रूप से सुलभ हो जाती है।

15) प्राकृतिक खेती पर स्विच करते समय मुझे अपने मौजूदा रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का क्या करना चाहिए?

धीरे-धीरे प्राकृतिक विकल्पों की ओर बढ़ते हुए मौजूदा स्टॉक का विवेकपूर्ण ढंग से उपयोग करें और उचित निपटान दिशानिर्देशों के लिए कृषि विशेषज्ञों से परामर्श करें।

16) मैं सिंथेटिक उर्वरकों के बिना प्राकृतिक खेती में मिट्टी की उर्वरता कैसे सुधार सकता हूँ?

मिट्टी की उर्वरता को प्राकृतिक रूप से समृद्ध करने के लिए कम्पोस्ट, वर्मीकम्पोस्ट, हरी खाद और गाय आधारित उत्पादों जैसे गाय के गोबर और गोमूत्र का उपयोग करें।

17) प्राकृतिक खेती में खाद की क्या भूमिका है, और मैं इसे कैसे बना सकता हूँ?

खाद मिट्टी को आवश्यक पोषक तत्व और लाभकारी सूक्ष्मजीव प्रदान करती है। रसोई के कचरे, फसल के अवशेष और गाय के गोबर जैसे कार्बनिक पदार्थों से खाद बनाएं।

18) क्या प्राकृतिक खेती के लिए उपयुक्त विशिष्ट प्रकार की खाद हैं?

स्थानीय रूप से उपलब्ध जैविक सामग्री से बनी खाद प्राकृतिक खेती के लिए उपयुक्त है। अपने क्षेत्र के संसाधनों के अनुसार खाद व्यंजनों को अपनाएँ।

19) क्या मैं प्राकृतिक खेती में गाय के गोबर जैसी पशु-आधारित खाद का उपयोग कर सकता हूँ और मुझे इसे कैसे लगाना चाहिए?

हाँ, गाय का गोबर एक मूल्यवान प्राकृतिक उर्वरक है। इसे पानी में घोलकर तरल उर्वरक के रूप में प्रयोग करें या खाद में उपयोग करें।

20) हरी खाद क्या है, और यह प्राकृतिक खेती में मेरी मिट्टी को कैसे लाभ पहुँचा सकती है?

हरी खाद में फलियां जैसी कवर फसलें लगाना और उर्वरता में सुधार करने, कार्बनिक पदार्थ जोड़ने और नाइट्रोजन को ठीक करने के लिए उन्हें वापस मिट्टी में मिलाना शामिल है।

मैं प्राकृतिक कृषि पद्धतियों में मिट्टी के कटाव को कैसे रोक्ूँ?

समोच्च खेती, मल्लिंग और विंडब्रेक का उपयोग जैसी तकनीकें प्राकृतिक खेती में मिट्टी के कटाव को रोकने में मदद कर सकती हैं।

21) मैं रासायनिक कीटनाशकों के बिना प्राकृतिक खेती में कीटों और बीमारियों का प्रबंधन कैसे कर सकता हूँ?

कीटों और बीमारियों के प्रबंधन के लिए प्राकृतिक शिकारियों, जाल वाली फसलों, नीम आधारित उत्पादों और साथी रोपण का उपयोग करें।

22) क्या रासायनिक कीटनाशकों के प्राकृतिक विकल्प हैं जो भारतीय परिस्थितियों में प्रभावी हैं?

हाँ, नीम का तेल, लहसुन और मिर्च स्प्रे जैसे पदार्थ भारतीय परिस्थितियों में कीटों को प्रभावी ढंग से नियंत्रित करने में मदद कर सकते हैं।

23) प्राकृतिक कीट प्रबंधन में नीम आधारित उत्पाद क्या भूमिका निभाते हैं?

नीम-आधारित उत्पाद प्राकृतिक कीटनाशकों और फफूंदनाशकों के रूप में कार्य करते हैं, जो कई कीटों के जीवन चक्र को बाधित करते हैं।

24) मैं प्राकृतिक तरीकों का उपयोग करके अपनी फसलों में बीमारियों को फैलने से कैसे रोक सकता हूँ?

फसल चक्र अपनाने, पौधों के स्वास्थ्य को बनाए रखने और भीड़भाड़ से बचने से स्वाभाविक रूप से बीमारियों के प्रसार को रोकने में मदद मिल सकती है।

25) क्या ऐसी सहवर्ती रोपण तकनीकें हैं जो प्राकृतिक खेती में कीटों को नियंत्रित करने में मदद करती हैं?

हाँ, सह-रोपण में कीटों को रोकने या लाभकारी कीड़ों को आकर्षित करने के लिए विशिष्ट फसलों को एक साथ लगाना शामिल है, जिससे कीट नियंत्रण में सहायता मिलती है।

26) फसल चक्र क्या है, और प्राकृतिक खेती में यह क्यों महत्वपूर्ण है?

फसल चक्र में मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार, कीटों के दबाव को कम करने और पोषक चक्र को बढ़ाने के लिए क्रमिक मौसमों में विभिन्न फसलें लगाना शामिल है।

27) मैं यह कैसे तय करूँ कि प्राकृतिक खेती में मेरे खेत में कौन सी फसल उगाई जाए?

उनकी पोषक तत्वों की जरूरतों, विकास की आदतों और स्थानीय जलवायु और मिट्टी की स्थितियों के साथ अनुकूलता के आधार पर फसलों का चयन करें।

28) क्या आप अंतरफसल की अवधारणा को समझा सकते हैं, और यह प्राकृतिक खेती में कैसे काम करती है?

अंतर - फसल (इंटरक्रॉपिंग) में एक ही खेत में दो या दो से अधिक फसल प्रजातियों को एक साथ लगाना शामिल है। यह स्थान को अनुकूलित करता है, कीटों को कम करता है और मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार करता है।

29) क्या फसलों के ऐसे विशिष्ट संयोजन हैं जो भारतीय किसानों के लिए सहफसल खेती में अच्छा काम करते हैं?

उपयुक्त संयोजन क्षेत्र के अनुसार अलग-अलग होते हैं, लेकिन सामान्य उदाहरणों में अनाज के साथ फलियां लगाना या सब्जियों के साथ जड़ी-बूटियां लगाना शामिल है।

30) प्राकृतिक खेती में अंतरफसलन मिट्टी के स्वास्थ्य और फसल की पैदावार को बेहतर बनाने में कैसे मदद करती है?

अंतरफसल जड़ प्रणालियों में विविधता लाती है, पोषक तत्वों के चक्रण में सुधार करती है, मिट्टी का कटाव कम करती है और समग्र मिट्टी के स्वास्थ्य को बढ़ाती है।

31) प्राकृतिक खेती में खरपतवार नियंत्रण के प्रभावी तरीके क्या हैं?

प्रभावी खरपतवार प्रबंधन विधियों में आच्छादन (मल्लिंग), हाथ से निराई करना और नीम आधारित उत्पादों जैसे प्राकृतिक जड़ी-बूटियों का उपयोग करना शामिल है।

32) क्या मल्लिंग प्राकृतिक खेती में खरपतवार प्रबंधन में मदद कर सकती है, और यह कैसे किया जाता है?

हां, मल्लिंग में खरपतवार की वृद्धि को रोकने और नमी को संरक्षित करने के लिए मिट्टी को पुआल, पत्तियों या फसल के अवशेषों जैसे कार्बनिक पदार्थों से ढंकना शामिल है।

33) क्या कोई प्राकृतिक शाकनाशी या खरपतवार दमनकर्ता हैं जिनका उपयोग मैं प्राकृतिक खेती में कर सकता हूँ?

नीम-आधारित उत्पाद और सिरके के घोल पर्यावरण को नुकसान पहुँचाए बिना प्राकृतिक खरपतवार शमनकर्ता के रूप में कार्य कर सकते हैं।

34) मुझे कैसे पता चलेगा कि प्राकृतिक खेती में मेरी फसलें कब कटाई के लिए तैयार हैं?

कटाई के लिए सबसे अच्छा समय निर्धारित करने के लिए रंग, आकार और बनावट जैसे फसल परिपक्वता संकेतकों की निगरानी करें।

35) प्राकृतिक खेती में फसलों की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए उनकी कटाई के सर्वोत्तम तरीके क्या हैं?
तेज, साफ औजारों का उपयोग करें, फसलों को धीरे से संभालें और प्रतिकूल मौसम की स्थिति के दौरान कटाई से बचें।

36) क्या काटी गई उपज की शेल्फ लाइफ बढ़ाने के लिए कोई प्राकृतिक तरीके हैं?

उचित भंडारण, ठंडे तापमान और प्राकृतिक परिरक्षकों का उपयोग जैसी तकनीकें काटी गई उपज के जीवनावधि को बढ़ा सकती हैं।

37) खराब होने और कीटों से बचाने के लिए मुझे जैविक उत्पादों का भंडारण कैसे करना चाहिए?

उपज को साफ, हवादार कंटेनरों या कमरों में स्टोर करें, और कीटों को रोकने के लिए नीम की पत्तियों जैसे प्राकृतिक तरीकों का उपयोग करने पर विचार करें।

38) क्या भारतीय बाजार में जैविक उत्पादों की मांग है?

हां, उपभोक्ताओं के बीच बढ़ती स्वास्थ्य जागरूकता के कारण जैविक उत्पादों की मांग बढ़ रही है।

39) मैं अपने जैविक उत्पादों का स्थानीय और क्षेत्रीय स्तर पर विपणन और बिक्री कैसे कर सकता हूँ?

जैविक उत्पादों में रुचि रखने वाले उपभोक्ताओं तक पहुंचने के लिए स्थानीय किसानों के बाजारों, जैविक खाद्य दुकानों, ऑनलाइन प्लेटफार्मों और सीधी बिक्री का पता लगाएं।

40) क्या जैविक उत्पादों के लिए प्रमाणन प्रक्रियाएं हैं, और क्या मुझे प्रमाणित होने पर विचार करना चाहिए?

जैविक प्रमाणीकरण वैकल्पिक है, लेकिन यह बाजार के अवसरों को बढ़ा सकता है। एनपीओपी और पीजीएस-इंडिया जैसी प्रमाणन एजेंसियां जैविक प्रमाणन प्रदान करती हैं।

41) भारतीय बाजार में जैविक फसलों के लिए संभावित मूल्य प्रीमियम क्या हैं?

जैविक फसलों की कीमत अक्सर अधिक होती है, लेकिन प्रीमियम फसल के प्रकार, स्थान और बाजार की मांग जैसे कारकों के आधार पर भिन्न होता है।

42) प्राकृतिक खेती करने वाले भारतीय किसानों के सामने आने वाली कुछ सामान्य चुनौतियाँ क्या हैं?

चुनौतियों में कीट और रोग प्रबंधन, ज्ञान अंतराल, परिवर्तन का प्रतिरोध और विपणन बाधाएँ शामिल हो सकती हैं।

43) मैं प्राकृतिक खेती में फसल की पैदावार और आय में उतार-चढ़ाव से कैसे निपट सकता हूँ?

फसलों में विविधता लाएं, बफर बचत करें और उतार-चढ़ाव के प्रबंधन के लिए अनुभव और रणनीतियों को साझा करने के लिए किसान नेटवर्क में भाग लें।

44) क्या प्राकृतिक खेती पद्धतियों से जुड़े कोई जोखिम हैं?

जोखिमों में कीटों के प्रकोप या मौसम की स्थिति के कारण संभावित फसल हानि शामिल है, लेकिन उचित योजना के साथ इन्हें अक्सर कम किया जा सकता है।

45) मैं प्राकृतिक खेती के संबंध में पारंपरिक किसानों या परिवार के सदस्यों के विरोध से कैसे निपट सकता हूँ?

धीरे-धीरे समर्थन हासिल करने के लिए संवाद में शामिल हों, सफलता की कहानियाँ साझा करें और प्राकृतिक खेती के लाभों का प्रदर्शन करें।

46) मुझे भारत में प्राकृतिक खेती पर प्रशिक्षण और शैक्षिक संसाधन कहां मिल सकते हैं?

स्थानीय कृषि विस्तार सेवाओं, सरकारी कार्यक्रमों, गैर सरकारी संगठनों और प्राकृतिक खेती पर केंद्रित ऑनलाइन पाठ्यक्रमों और मंचों से प्रशिक्षण लें।

47) क्या ऐसी सरकारी पहल या कार्यक्रम हैं जो प्राकृतिक खेती का समर्थन करते हैं?

हाँ, परम्परागत कृषि विकास योजना (पीकेवीवाई) और राष्ट्रीय कृषि विकास योजना (आरकेवीवाई) जैसी सरकारी पहल प्राकृतिक कृषि पद्धतियों के लिए सहायता प्रदान करती हैं।

48) क्या मैं समर्थन और नेटवर्किंग के लिए किसी स्थानीय प्राकृतिक कृषि सहकारी समिति या संघ से जुड़ सकता हूँ?

हाँ, स्थानीय सहकारी समितियों या संघों में शामिल होने से मूल्यवान समर्थन, ज्ञान साझाकरण और संसाधनों तक पहुंच मिल सकती है।

49) प्राकृतिक खेती करने वाले भारतीय किसानों के लिए कौन से ऑनलाइन मंच या समुदाय उपलब्ध हैं?

प्राकृतिक खेती के लिए समर्पित सोशल मीडिया समूह, फ़ोरम और वेबसाइट जैसे ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म आपको मार्गदर्शन और समर्थन के लिए समान विचारधारा वाले किसानों और विशेषज्ञों से जोड़ सकते हैं।

50) जैव विविधता क्या है?

जैव विविधता एक पारिस्थितिकी तंत्र में रहने वाले पौधों, जानवरों और अन्य जीवों की संख्या और विविधता है।

51) जैव विविधता की समझ किसानों के लिए क्यों महत्वपूर्ण है?

जैव विविधता किसानों को यह समझने में मदद करती है कि पारिस्थितिकी तंत्र में विभिन्न प्रजातियाँ एक दूसरे के साथ कैसे बातचीत करती हैं। यह ज्ञान हमें यह समझने में मदद कर सकता है कि हम अपनी भूमि का बेहतर प्रबंधन कैसे कर सकते हैं ताकि हम भविष्य की पीढ़ियों के लिए अपनी खाद्य आपूर्ति को स्थायी रूप से बढ़ा सकें।

52) प्राकृतिक खेती जैव विविधता को बनाए रखने में कैसे मदद करती है?

प्राकृतिक खेती में हानिकारक रासायनिक उर्वरकों का उपयोग शामिल नहीं है, मिट्टी में कार्बनिक पदार्थ बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। स्वस्थ मिट्टी अधिक मिट्टी की जैव विविधता जैसे लाभकारी सूक्ष्मजीवों, केंचुओं

आदि का समर्थन करती है। यह लाभकारी कीड़ों/पक्षियों/परागणकों की आबादी को बनाए रखने में मदद करती है।

53) फसल विविधीकरण क्या है?

फसल विविधीकरण अर्थात किसी दिए गए कृषि क्षेत्र में फसल चक्र और/या सहयोग के रूप में एक से अधिक प्रजातियों की खेती करने की प्रथा।

54) न्यूनतम मृदा अशांति का क्या अर्थ है?

प्राकृतिक खेती में मिट्टी की तैयारी के दौरान अपनाई जाने वाली गतिविधियाँ जो मिट्टी में गड़बड़ी को कम करती हैं।

55) न्यूनतम मृदा अशांति कैसे प्राप्त की जा सकती है?

इसे निम्नलिखित द्वारा प्राप्त किया जा सकता है:

- जुताई की प्रथाओं में कमी (जैसे कि जुताई, हैरोइंग, और बीज के अंकुरण के लिए मिट्टी तैयार करने के लिए आमतौर पर लागू होने वाली सभी जुताई की गतिविधियाँ)।

- प्राकृतिक उर्वरक का सीधा प्रयोग।

56) व्हापासा क्या है?

यह वह स्थिति है जहां मिट्टी के दो कणों के बीच की गुहा में हवा के अणु और पानी के अणु दोनों मौजूद होते हैं। यह मिट्टी का माइक्रोक्लाइमेट है जिस पर मिट्टी के जीव और जड़ें अपनी अधिकांश नमी और कुछ पोषक तत्वों के लिए निर्भर करती हैं।

57) मल्लिंग क्या है?

मल्लिंग को जीवित फसलों और पुआल (मृत पौधे बायोमास) दोनों का उपयोग करके मिट्टी की सतह को ढकने के रूप में परिभाषित किया गया है।

58) मल्लिंग कितने प्रकार की होती है?

ए) मल्लिंग दो प्रकार की होती है-

1) फसल अवशेष मल्लः

कटाई के बाद बची हुई फसल सामग्री जैसे: सूखे पत्ते, पुआल, छोटी टहनियाँ आदि का उपयोग मिट्टी को ढकने के लिए किया जाता है।

2) लाइव मल्लः

मुख्य फसल की पंक्तियों में छोटी अवधि वाली फसलों के बहु-फसल/अंतर्फसल पैटर्न विकसित करके लाइव मल्लिंग का अभ्यास किया जाता है।

उदाहरण: गेहूं/चावल (पोटाश, फॉस्फेट और सल्फर जैसे पोषक तत्वों की आपूर्ति) के साथ दालें (नाइट्रोजन-फिक्सिंग पौधे) बोना

59) बहुफसली खेती क्या है?

भूमि के एक ही टुकड़े पर एक साथ दो या दो से अधिक फसलें उगाना बहुफसली खेती है।

60) खेती में केंचुए की क्या भूमिका है?

ए) केंचुए बायोडिग्रेडेबल पदार्थों का उपभोग करते हैं और उन्हें समृद्ध खाद में परिवर्तित करते हैं। केंचुए "हल" करते हैं और मिट्टी को मिला देते हैं। उनकी सुरंग बनाने से मिट्टी ढीली हो जाती है जिससे पानी और पोषक तत्व नीचे की ओर जा सकते हैं। कृमि कास्टिंग में मौजूद पोषक तत्व मिट्टी को समृद्ध करते हैं। वे जो कीचड़ स्रावित करते हैं उसमें नाइट्रोजन होता है, जो पौधों के लिए एक महत्वपूर्ण पोषक तत्व है।

61) पोषक तत्व प्रबंधन में सूक्ष्म जीवों की क्या भूमिका है?

सूक्ष्मजीव मिट्टी में पोषक तत्वों और खनिजों को पौधों के लिए उपलब्ध करा सकते हैं, हार्मोन का उत्पादन कर सकते हैं जो विकास को बढ़ावा देते हैं, पौधों की प्रतिरक्षा प्रणाली को उत्तेजित करते हैं और तनाव प्रतिक्रियाओं को ट्रिगर या कम कर सकते हैं। सामान्य तौर पर, अधिक विविध मृदा माइक्रोबायोम के परिणामस्वरूप पौधों में कम बीमारियाँ होती हैं और उपज अधिक होती है।

62) ह्यूमस क्या है?

ह्यूमस एक काला, कार्बनिक पदार्थ है जो पौधे और पशु पदार्थ के क्षय से बनता है।

63) मिट्टी में ह्यूमस कैसे बनता है?

पौधे पत्तियाँ, टहनियाँ और अन्य सामग्री जमीन पर गिरा देते हैं। इन सामग्रियों का ढेर लग जाता है। और पत्ती कूड़े का निर्माण करते हैं। जब जानवर मर जाते हैं, तो उनके अवशेष कूड़े में मिल जाते हैं। समय के साथ, यह सारा कूड़ा ह्यूमिफिकेशन नामक प्रक्रिया के माध्यम से अपने सबसे बुनियादी रासायनिक तत्वों में विघटित/टूट जाता है। अधिकांश कार्बनिक कूड़े के विघटित होने के बाद जो गाढ़ा भूरा या काला पदार्थ बचता है उसे ह्यूमस कहा जाता है। ह्यूमसीकरण द्वारा उत्पादित ह्यूमस इस प्रकार पौधों, जानवरों या माइक्रोबियल मूल के यौगिकों और जटिल जैविक रसायनों का मिश्रण होता है जिसके कई कार्य और लाभ होते हैं।

64) ह्यूमस मिट्टी के लिए किस प्रकार लाभदायक है?

यह मिट्टी को उपजाऊ बनाता है क्योंकि इसमें स्वस्थ मिट्टी के लिए कई उपयोगी पोषक तत्व होते हैं। यह मृदा जनित रोगों के दमन में मदद करता है। यह माइक्रोपोरसिटी को बढ़ाकर मिट्टी में नमी बनाए रखने में मदद करता है। यह अच्छी मिट्टी की संरचना के निर्माण को प्रोत्साहित करता है और पौधों के पोषक तत्वों की उपलब्धता को बढ़ाता है।

65) गोमूत्र के पोषक तत्व क्या हैं और यह प्राकृतिक खेती में मिट्टी के लिए कैसे फायदेमंद है?

नाइट्रोजन, पोटेशियम और फॉस्फोरस के साथ पोषक तत्वों से भरपूर गोमूत्र मिट्टी में पतला करने और प्रत्यक्ष उपयोग या फॉर्मूलेशन और अप्रत्यक्ष अनुप्रयोगों के लिए अत्यधिक फायदेमंद है। मैक्रोन्यूट्रिएंट्स के अलावा, सल्फर, सोडियम, मैंगनीज, आयरन, एंजाइम और क्लोरीन की मौजूदगी गोमूत्र को एक अभिन्न प्राकृतिक कीट प्रतिरोधी बनाती है जिसके लिए टिकाऊ कृषि के लिए कम बाहरी इनपुट की आवश्यकता होती है।

66) मृदा स्वास्थ्य कार्ड क्या है?

एसएचसी एक मुद्रित रिपोर्ट है जिसे एक किसान को उसकी प्रत्येक जोत के लिए सौंप दिया जाएगा। इसमें 12 मापदंडों, अर्थात् एन, पी, के (मैक्रो-पोषक तत्व) के संबंध में उसकी मिट्टी की स्थिति शामिल होगी; (माध्यमिक-पोषक तत्व) ; Zn, Fe, Cu, Mn, Bo (सूक्ष्म पोषक तत्व); और पीएच, ईसी, ओसी (भौतिक पैरामीटर)। इसके आधार पर, एसएचसी खेत के लिए आवश्यक उर्वरक सिफारिशों और मिट्टी संशोधन का भी संकेत देगा।

